eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा की स्थिति

[1]डा0 प्रियंका रानी
[1]सहायक प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Abstract

वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ भाषाई विविधता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है। हिंदी भाषा, जो विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है, परंतु इसके सामने कई प्रकार की चुनौतियाँ भी हैं। यह शोध–पत्र सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति, उसके प्रयोग के पैटर्न, चुनौतियाँ, संभावनाएँ और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। शोध में यह पाया गया कि हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है, विशेषकर छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में, किन्तु रोमन लिपि का बढ़ता प्रयोग, अंग्रेजी की वर्चस्वशाली स्थिति, तकनीकी सीमाएँ और भाषिक शुद्धता की उपेक्षा इस विकास के मार्ग में बाधाएँ उत्पन्न कर रही हैं। यह शोध सुझाव देता है कि हिंदी भाषा की स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु तकनीकी नवाचार, नीतिगत हस्तक्षेप और भाषिक साक्षरता को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।

प्रमुख शब्द – हिंदी भाषा, सोशल मीडिया, डिजिटल संचार, भाषिक विविधता, रोमन लिपि, भाषाई अस्मिता, डिजिटल इंडिया, युवा वर्ग

Introduction

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में जब दुनिया भर में डिजिटल क्रांति अपने चरम पर पहुँची, तब भारत भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा। स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुँच के विस्तार ने आम नागरिक को एक नया मंच प्रदान किया, जिसे हम आज सोशल मीडिया के नाम से जानते हैं। यह मंच न केवल संवाद का माध्यम बना, बल्कि भाषाई अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक प्रस्तुति का प्रमुख साधन भी बन गया। भारत जैसे बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक देश में, जहाँ हिंदी देश की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, सोशल मीडिया पर हिंदी की उपस्थिति विशेष महत्व रखती है। हिंदी भाषियों की संख्या देश में लगभग 60 करोड़ से अधिक है और यह भाषा विश्व स्तर पर तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। ऐसे में यह अपेक्षित था कि हिंदी भी सोशल मीडिया की दुनिया में एक सशक्त और स्वाभाविक उपस्थिति दर्ज कराएगी।

वास्तव में, फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी में संवाद, अभिव्यक्ति, हास्य, राजनीति, सामाजिक मुद्दों और साहित्यिक विषयों पर निरंतर गतिविधियाँ देखी जा रही हैं। परंतु, इस विकास के साथ ही कई नई समस्याएँ और चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जैसे कि हिंदी की वर्तनी और व्याकरण की अशुद्धियाँ, रोमन लिपि का अत्यधिक प्रयोग, अंग्रेजी का वर्चस्व और भाषिक अस्मिता का क्षरण। यह शोध–पत्र इन्हीं पक्षों का सम्यक मूल्यांकन करने का प्रयास है। इसमें सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति, उसका स्वरूप, उपस्थिति की मात्रा एवं गुणवत्ता,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

प्रयोग की प्रवृत्तियाँ, तकनीकी और सामाजिक चुनौतियाँ, तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्ययन का उद्देश्य हिंदी भाषा के सोशल मीडिया में प्रयोग को मात्र संख्यात्मक दृष्टिकोण से न देखकर, उसकी भाषिक गरिमा, संरचना, अभिव्यंजना क्षमता और सामाजिक प्रभावों के परिप्रेक्ष्य में समझना है। यह कार्य केवल एक भाषिक विश्लेषण नहीं, बल्कि हिंदी की डिजिटल यात्रा का सजीव दस्तावेज़ बनने का प्रयास भी है।

सोशल मीडिया और भाषिक परिदृश्य– सोशल मीडिया आज केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा सामाजिक मंच बन चुका है जो विचार–विनिमय, रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, सूचना और मनोरंजन के विविध आयामों को समाहित करता है। इसकी विशेषता यह है कि यह उपयोगकर्ता को किसी भी समय, किसी भी स्थान से अपनी बात रखने और दूसरों से जुड़ने की स्वतंत्रता देता है। भारत जैसे विविध भाषाओं वाले देश में सोशल मीडिया ने भाषिक स्तर पर एक नया परिदृश्य रचा है, जहाँ हिंदी भाषा भी अपनी उपस्थिति और अस्मिता के साथ उभर रही है।

डिजिटल क्रांति और हिंदी भाषी उपयोगकर्ता– भारत में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या 2024 तक 80 करोड़ से अधिक पहुँच चुकी है, जिनमें से बड़ी संख्या हिंदी भाषी क्षेत्रों से है। छोटे शहरों, कस्बों और गाँवों में भी स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुँच ने यह सुनिश्चित किया है कि अब डिजिटल संवाद केवल अंग्रेज़ी तक सीमित नहीं रहा। फेसबुक, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी में कंटेंट बनाने और साझा करने वालों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है।

सोशल मीडिया की भाषिक संरचना में हिंदी की स्थिति– आरंभ में, सोशल मीडिया पर अंग्रेज़ी भाषा का प्रभुत्व रहा, क्योंकि अधिकांश तकनीकी प्लेटफॉर्म्स की इंटरफेस और सुविधाएँ अंग्रेज़ी केंद्रित थीं। परंतु समय के साथ देवनागरी लिपि के लिए यूनिकोड की मान्यता, हिंदी इनपुट टूल्स की उपलब्धता और स्थानीय भाषाओं की मांग ने हिंदी की भूमिका को प्रबल किया। आज हिंदी न केवल व्यक्तिगत संवाद का माध्यम है, बल्कि व्यावसायिक, राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक विमर्शों में भी सोशल मीडिया पर सक्रिय भूमिका निभा रही है। ट्विटर ट्रेंड्स में हिंदी हैशटैग की उपस्थिति, फेसबुक पेजों पर हिंदी में संवाद, यूट्यूब चौनलों की सामग्री, इंस्टाग्राम पर हिंदी रील्स यह सब इस बात के प्रमाण हैं कि हिंदी अब डिजिटल मीडिया की एक प्रभावशाली भाषा बन चुकी है।

भाषिक लोकतंत्र की ओर कदम– सोशल मीडिया ने भाषिक लोकतंत्र को नई दिशा दी है। अब किसी भी भाषा में कोई भी व्यक्ति अपनी बात कह सकता है, और यह बात लाखों–करोड़ों लोगों तक पहुँच सकती है। इस प्रक्रिया में हिंदी को विशेष लाभ मिला है क्योंकि यह भारत की बहुसंख्यक आबादी की प्रथम या द्वितीय भाषा है। अनेक हिंदीभाषी युवाओं, महिलाओं, ग्रामीण निवासियों और क्षेत्रीय रचनाकारों को अपनी अभिव्यक्ति के लिए अब पारंपरिक मीडिया की आवश्यकता नहीं, सोशल मीडिया ही उनका मंच बन चुका है।

बहुभाषिकता में हिंदी की पहचान– भारत में भाषाई विविधता के बीच हिंदी एक संपर्क भाषा (link language) के रूप में उभर रही है। सोशल मीडिया पर अक्सर देखा जाता है कि दक्षिण भारत, पूर्वोत्तर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

और गैर–हिंदी भाषी क्षेत्रों के उपयोगकर्ता भी संवाद की सरलता के लिए हिंदी का सहारा लेते हैं। यह स्थिति हिंदी की स्वीकार्यता और व्यवहारिकता को दर्शाती है। हालाँकि हिंदी की उपस्थिति सोशल मीडिया पर सशक्त होती जा रही है, किंतु इसकी गुणवत्ता, लिपि, और भाषिक संरचना के संदर्भ में कुछ समस्याएँ भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, जिन पर अगला खंड (हिंदी भाषा की डिजिटल यात्रा) केंद्रित होगा।

हिंदी भाषा की डिजिटल यात्रा– हिंदी भाषा की डिजिटल यात्रा भारत के भाषिक और तकनीकी इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। जिस भाषा ने अपने विकास की यात्रा ताड़पत्रों और हस्तलिखित पांडुलिपियों से प्रारंभ की, वह आज कंप्यूटर, मोबाइल और इंटरनेट के युग में सशक्त रूप से अपनी पहचान दर्ज करा रही है। यह यात्रा न केवल तकनीकी परिवर्तन की कहानी है, बल्कि भाषिक अनुकूलन, प्रयोग, नवाचार और संघर्ष की भी कथा है।

प्रारंभिक चरण, कंप्यूटर और हिंदी– 1990 के दशक में जब भारत में कंप्यूटर और टेलीविज़न का प्रसार हुआ, तब हिंदी भाषा को इन प्लेटफॉर्म्स पर स्थान नहीं मिल पा रहा था। तब तक अधिकतर सॉफ़्टवेयर और ऑपरेटिंग सिस्टम केवल अंग्रेज़ी आधारित थे। हिंदी टाइपिंग के लिए भी अलग–अलग कीबोर्ड लेआउट और फॉन्ट्स का प्रयोग होता था, जिससे एकरूपता नहीं बन सकी। इस समय 'कृतिदेव', 'चाणक्य' आदि गैर–यूनिकोड फॉन्ट्स में हिंदी सामग्री लिखी जाती थी, जिन्हें एक प्लेटफॉर्म से दूसरे पर भेजना कठिन था। यह स्थिति तब तक बनी रही जब तक यूनिकोड ने डिजिटल दुनिया में भाषा का एकीकृत मानक प्रदान नहीं किया।

यूनिकोड और हिंदी का नवजन्म– 2001 के आसपास यूनिकोड तकनीक का आगमन हिंदी भाषा के लिए क्रांतिकारी सिद्ध हुआ। इसके द्वारा देवनागरी लिपि को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एक मानक पहचान मिली, जिससे अब हिंदी को वेबसाइट, ब्लॉग, ईमेल, मोबाइल, और सोशल मीडिया पर एकसमान रूप में पढ़ा और लिखा जा सकता है। इसके साथ ही गूगल इनपुट टूल्स, ट्रांसलिटरेशन तकनीक, वर्चुअल कीबोर्ड और स्पीच–टू–टेक्स्ट जैसे नवाचारों ने हिंदी टाइपिंग को सरल बनाया।

हिंदी ब्लॉगिंग से सोशल मीडिया तक– 2005 के बाद भारत में हिंदी ब्लॉगिंग का दौर प्रारंभ हुआ। अनेक साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षाविद् और युवा लेखक हिंदी ब्लॉगों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करने लगे। 'भड़ास', 'नई बात', 'हिंदिनी', 'नारी ब्लॉग' जैसे हिंदी ब्लॉगों ने गंभीर विमर्श की परंपरा को डिजिटल रूप दिया। ब्लॉगिंग के इस दौर के बाद जब फेसबुक (2008 के बाद), ट्विटर (2010 से), और बाद में यूट्यूब, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप जैसी सोशल मीडिया सेवाओं का प्रभाव बढ़ा, तब हिंदी का प्रयोग और भी सहज और जनसुलभ हो गया।

यूट्यूब और हिंदी कंटेंट क्रांति– यूट्यूब ने विशेष रूप से हिंदी भाषी दर्शकों को आकर्षित किया है। शिक्षा, कॉमेडी, पाक कला, इतिहास, धर्म, राजनीति, मनोरंजन लगभग हर क्षेत्र में हजारों हिंदी यूट्यूब चौनल्स सक्रिय हैं। इनके माध्यम से आम जनता न केवल जानकारी प्राप्त करती है, बल्कि स्थानीय रचनाकारों को पहचान और आजीविका भी प्राप्त होती है। Study IQ, Amit Bhadana, Dhruv Rathee,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

MyGov Hindi,Abhi and Niyu, Ashish Chanchlani जैसे चौनल्स ने यह सिद्ध किया कि हिंदी में प्रस्तुत किया गया कंटेंट भी करोड़ों दर्शकों तक प्रभावी ढंग से पहुँच सकता है।

हिंदी समाचार पोर्टल्स और डिजिटल पत्रकारिता– आज लगभग सभी प्रमुख समाचार संस्थान, जैसे दैनिक भास्कर, आजतक, अमर उजाला, लाइव हिन्दुस्तान आदि, अपने डिजिटल संस्करणों में सक्रिय हैं और हिंदी भाषा में समाचार, ब्लॉग, वीडियो व विश्लेषण प्रस्तुत कर रहे हैं। हिंदी डिजिटल पत्रकारिता ने अब स्वतंत्र पोर्टल्स को भी जन्म दिया है जैसे, क्विंट हिंदी, न्यूज़ लॉन्ड्री हिंदी, डाउन टू अर्थ हिंदी आदि।

तकनीकी कंपनियों का हिंदी के प्रति झुकाव– गूगल, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसी वैश्विक कंपनियों ने भी हिंदी को प्राथमिकता देना आरंभ किया है। आज इन सभी प्लेटफॉर्म्स की सेटिंग्स, सहायता केंद्र, यूजर इंटरफेस हिंदी में उपलब्ध हैं। गूगल सर्च और गूगल असिस्टेंट अब हिंदी में प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं, जिससे हिंदी उपयोगकर्ताओं को डिजिटल दुनिया से जुड़ने में सुविधा मिलती है। हिंदी की डिजिटल यात्रा एक लंबी प्रक्रिया रही है जिसमें तकनीकी सहयोग, भाषिक नवाचार, सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक स्वीकृति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि डिजिटल उपस्थिति की सशक्त अभिव्यक्ति बन चुकी है। यह यात्रा अभी पूर्ण नहीं हुई है, भविष्य में हिंदी के लिए और भी अवसर व चुनौतियाँ उपस्थित हैं।

हिंदी भाषा का सोशल मीडिया पर प्रभाव– डिजिटल क्रांति और स्मार्टफोन की सर्वसुलभता ने भारतीय समाज में एक भाषाई क्रांति को जन्म दिया है। पहले जहाँ पारंपरिक मीडिया (अखबार, दूरदर्शन, रेडियो) पर हिंदी की सीमित उपस्थिति थी, वहीं आज सोशल मीडिया पर यह भाषा आम जनमानस की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बन चुकी है। इस भाग में हम हिंदी भाषा पर सोशल मीडिया के प्रभाव को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भाषिक दृष्टिकोण से समझेंगे।

सामाजिक प्रभाव– जन–संवाद का लोकतंत्रीकरण अर्थात सोशल मीडिया ने जनसामान्य को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया है। अब हिंदी भाषी वर्ग भी अपनी बात कहने, साझा करने और दूसरों तक पहुँचाने में समर्थ है। हिंदी में जागरूकता अभियान अर्थात COVID–19, स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ जैसे अभियानों में सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रभावी उपयोग हुआ है। नवजागरण और सामाजिक मुद्दे अर्थात जाति, लिंग, पर्यावरण, बेरोज़गारी जैसे विषयों पर हिंदी में बहसें और पोस्ट व्यापक स्तर पर सामने आई हैं।

राजनीतिक प्रभाव– राजनीतिक दलों का हिंदी में प्रचाररू बीजेपी, कांग्रेस, आम आदमी पार्टी समेत सभी प्रमुख दल ट्विटर, फेसबुक, और इंस्टाग्राम पर हिंदी में पोस्ट साझा करते हैं। नेताओं की लोकप्रियता अर्थात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, योगी आदित्यनाथ, अरविंद केजरीवाल आदि नेताओं के ट्विटर हैंडल पर हिंदी पोस्ट लाखों में रीट्वीट होते हैं। राजनीतिक विमर्श और जनभागीदारी अर्थात आम जनता अब हिंदी में प्रश्न पूछती है, आलोचना करती है और आंदोलन खड़े करती है। उदाहरण– रुकिसान–आंदोलन, रुन्याय–मिले–हाथरस–की–बेटी–को।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

आर्थिक और व्यापारिक प्रभाव– हिंदी में डिजिटल मार्केटिंगरू कंपनियाँ अपने उत्पादों का प्रचार हिंदी में कर रही हैं जैसे "अब हर कोई बोलेगा शानदार कैमरा वाला फोन।" E-Commerce और Hindi UI: अमेज़न, फ्लिपकार्ट जैसे पोर्टल्स ने हिंदी यूआई उपलब्ध कराए हैं। इससे ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में ग्राहक संख्या बढ़ी है। हिंदी कंटेंट क्रिएटर्स का उदय अर्थात यूट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक पर लाखों हिंदी भाषी कंटेंट क्रिएटर्स लाखों–करोड़ों रुपये कमा रहे हैं।

सांस्कृतिक प्रभाव– लोक संस्कृति और बोलियों का पुनरुत्थान अर्थात सोशल मीडिया पर भोजपुरी, अवधी, ब्रज जैसी बोलियों में भी वीडियो और पोस्ट साझा किए जा रहे हैं। हास्य, कविता, और कथा लेखन अर्थात फेसबुक पर हिंदी में व्यंग्य, शेरो–शायरी, और लघुकथाएँ खूब साझा होती हैं। "हिंदी कविता", "कविता मंच" जैसे पेज लाखों फॉलोअर्स रखते हैं। वर्चुअल हिंदी साहित्य सम्मेलन अर्थात हिंदी में ऑनलाइन कवि सम्मेलन, काव्य पाठ, पुस्तकों की समीक्षा जैसी गतिविधियाँ बढ़ी हैं।

भाषिक प्रभाव– हिंदी शब्दावली में नवप्रवेश अर्थात सोशल मीडिया ने हिंदी में नए शब्दों को जन्म दिया है जैसे "फॉलोअर्स", "ब्लॉक करना", "ट्रेंडिंग", "हैशटैग" आदि, जो आज के उपयोग में सामान्य हो चुके हैं।

भाषिक अशुद्धियाँ और रोमन हिंदी का प्रभाव– "Aap kya kar rahe ho" जैसे वाक्य सोशल मीडिया पर आम हैं, जिससे शुद्ध हिंदी और देवनागरी लिपि का ह्रास हो रहा है। व्याकरणहीन, अशुद्ध और मिश्रित भाषा के प्रयोग से हिंदी की स्वाभाविकता प्रभावित हो रही है। हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रण (हिंग्लिश)– उदाहरण "आज का दिन super awesome रहा!" यह मिश्रित भाषा सोशल मीडिया की पहचान बन गई है।

डिजिटल हिंदी और तकनीकी प्रगति– हिंदी टाइपिंग की सुविधा अर्थात गूगल इनपुट टूल्स, वॉइस टाइपिंग जैसे विकल्पों ने हिंदी लेखन को सरल बनाया है। हिंदी आधारित ऐप्स अर्थात "कू" जैसे भारतीय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा दे रहे हैं।

चुनौतियाँ– लिपि की अस्थिरता अर्थात देवनागरी का स्थान रोमन ने लिया है, जिससे हिंदी की मूल पहचान खतरे में है। प्रामाणिकता का संकट अर्थात हिंदी में तथ्यहीन या भ्रम फैलाने वाला कंटेंट तेजी से फैलता है, जिससे विश्वसनीयता प्रभावित होती है। विभाजित भाषा समुदाय अर्थात शहरी युवा रोमन हिंदी में लिखते हैं, जबकि ग्रामीण उपयोगकर्ता देवनागरी पसंद करते हैं इससे भाषा में एकरूपता नहीं बन पाती।

हिंदी भाषा ने सोशल मीडिया पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। यह अब केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण का औजार बन चुकी है। हालाँकि इसकी शुद्धता, लिपि और सांस्कृतिक स्वरूप की रक्षा के लिए नीति और तकनीक दोनों स्तरों पर सक्रिय प्रयासों की आवश्यकता है। यदि सही दिशा में प्रयास किए जाएँ, तो सोशल मीडिया पर हिंदी एक सशक्त और विश्वसनीय भाषा के रूप में स्थापित हो सकती है।

रोमन लिपि बनाम देवनागरी लिपि– हिंदी भाषा की आत्मा उसकी लिपि देवनागरी में बसती है, किंतु सोशल मीडिया के आगमन के साथ रोमन लिपि में हिंदी लेखन की प्रवृत्ति तीव्र गति से बढ़ी है। यह

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

खंड इस द्वंद्वात्मक स्थिति का विश्लेषण करता है कि किस प्रकार रोमन लिपि ने सोशल मीडिया पर देवनागरी को चुनौती दी है, और इसका हिंदी भाषा पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

देवनागरी लिपि की विशिष्टता– संविधानिक मान्यता अर्थात भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है। उच्चारण की स्पष्टता अर्थात देवनागरी में जैसा लिखा जाता है, वैसा ही पढ़ा और बोला जाता है। यह वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत संगठित लिपि है। साहित्यिक परंपरा अर्थात संपूर्ण हिंदी साहित्य, शास्त्रीय ग्रंथों से लेकर आधुनिक रचनाओं तक, देवनागरी में रचित है, जो सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखता है।

रोमन लिपि का उदय और उसका कारण– तकनीकी सुलभता अर्थात अधिकांश मोबाइल फोन और कंप्यूटर में रोमन कीबोर्ड पहले से होता है, देवनागरी टाइपिंग अतिरिक्त ज्ञान या ऐप की माँग करता है। युवा वर्ग की प्राथमिकता अर्थात अंग्रेज़ी में शिक्षित युवा वर्ग सोशल मीडिया पर हिंदी संवाद के लिए रोमन लिपि का प्रयोग अधिक करता है जैसे tum kahan ho, aaj movie chalein?"। स्पीड और आदत अर्थात रोमन में टाइपिंग की आदत और गति अधिक होती है, जिससे यह लोकप्रिय हो गया है।

सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव– भाषिक एकरूपता का संकट अर्थात एक ही वाक्य अनेक प्रकार से लिखा जा सकता है कृ रंव, रंव, रूंव कृ जिससे भाषा की स्थिरता और स्पष्टता प्रभावित होती है। साहित्यिक अवमूल्यन अर्थात देवनागरी में लिखे गए विचार अधिक गंभीर और औपचारिक प्रतीत होते हैं, जबकि रोमन हिंदी में लिखे विचार तात्कालिक और हल्के लगते हैं। सांस्कृतिक अलगाव अर्थात रोमन लिपि हिंदी को एक विदेशी लिपि में व्यक्त करती है, जिससे उसकी भारतीय पहचान और सांस्कृतिक गहराई धुंधली होती है।

भाषा और पहचान का संकट– नवपाठकों के लिए असमंजस अर्थात जो विद्यार्थी हिंदी सीख रहे हैं, उनके लिए रोमन लिपि में हिंदी पढ़ना भ्रमित करने वाला होता है। लिपि और विचार का संबंध अर्थात लिपि मात्र लेखन का माध्यम नहीं, विचार की संरचना का भी भाग होती है। देवनागरी से अलगाव हिंदी की सोच को भी प्रभावित करता है।

रोमन लिपि के उपयोग की स्थिति और प्रभाव– मीम्स, ट्रोल्स, और चुटकुले अर्थात अधिकांश सोशल मीडिया मीम्स रोमन हिंदी में होते हैं, जिससे युवा वर्ग का आकर्षण बना रहता है। राजनीतिक प्रचार अर्थात Abki Baar Modi Sarkar, Sabka Saath, Sabka Vikas जैसे नारे पहले रोमन में प्रचारित हुए। संवाद की तात्कालिकता अर्थात इंस्टैंट मैसेजिंग में रोमन का प्रयोग सरल और तीव्र संप्रेषण के लिए किया जाता है।

नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता– देवनागरी टूल्स का प्रचार अर्थात सरकार और तकनीकी कंपनियाँ हिंदी टाइपिंग को सरल और सहज बनाने वाले टूल्स को बढ़ावा दें। भाषा नीति में हस्तक्षेप अर्थात स्कूलों और विश्वविद्यालयों में डिजिटल देवनागरी टाइपिंग को पाठ्यक्रम का भाग बनाया जाए। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी UI: फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसी साइटों को हिंदी डिफॉल्ट विकल्प के रूप में प्रोत्साहित किया जाए। सोशल मीडिया के युग में हिंदी भाषा दो लिपियों के बीच झूल रही

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

है देवनागरी, जो उसकी आत्मा है, और रोमन, जो सुविधा का पर्याय बन गया है। यह आवश्यक है कि हम तकनीक के साथ कदम मिलाते हुए देवनागरी की रक्षा करें, ताकि हिंदी की भाषिक गरिमा और सांस्कृतिक पहचान अक्षुण्ण बनी रहे। रोमन लिपि का नियंत्रित उपयोग किया जा सकता है, किंतु इसे देवनागरी का विकल्प नहीं बनने देना चाहिए।

हिंदी भाषियों के लिए सोशल मीडिया अवसर या चुनौती?– 21वीं सदी में सोशल मीडिया न केवल संवाद का साधन है, बल्कि यह एक सामाजिक मंच, सूचना स्रोत, रोजगार का माध्यम, और वैचारिक विमर्श का अखाड़ा भी बन गया है। हिंदी भाषी जनसमुदाय के लिए सोशल मीडिया ने जहाँ नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं, वहीं कुछ गंभीर भाषिक, सामाजिक और तकनीकी चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। इस खंड में हम इन दोनों पहलुओं का समग्र विश्लेषण करेंगे।

अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम– हिंदी भाषियों के लिए सोशल मीडिया ने पहली बार बिना किसी संपादकीय हस्तक्षेप के अपनी बात कहने का लोकतांत्रिक मंच प्रदान किया। आम नागरिक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मुद्दों पर सीधे भाग ले सकता है।

क्षेत्रीय और ग्रामीण भारत की भागीदारी– सोशल मीडिया ने हिंदी बोलने वाले ग्रामीण और कस्बाई लोगों को वैश्विक मंच से जोड़ा है। लोकल से ग्लोबल की अवधारणा को हिंदी भाषियों ने आत्मसात किया है जैसे भोजपुरी या अवधी के वीडियो का यूट्यूब पर वैश्विक दर्शक वर्ग बनना।

रोजगार और उद्यमिता के नए द्वार– हिंदी यूट्यूबर, इंस्टाग्राम इन्फ्लुएंसर, फेसबुक कंटेंट क्रिएटर्स एक नया पेशेवर वर्ग बन चुके हैं। ऑनलाइन ट्यूशन, ब्लॉगिंग, डिजिटल मार्केटिंग आदि में हिंदी माध्यम से रोज़गार की नई संभावनाएँ उत्पन्न हुई हैं।

हिंदी साहित्य और संस्कृति का पुनरुत्थान– कवि सम्मेलन, व्यंग्य लेखन, कहानियाँ, विचार लेख आदि के डिजिटल मंचों से एक नई साहित्यिक चेतना का विकास हुआ है। "हिंदी कविता", "हिंदी साहित्य मंच" जैसे फेसबुक पेज और यूट्यूब चौनल लाखों लोगों को जोड़ रहे हैं।

भाषा के प्रति आत्मगौरव– सोशल मीडिया ने यह साबित कर दिया कि अभिव्यक्ति के लिए अंग्रेज़ी आवश्यक नहीं है; हिंदी में भी गंभीर, रोचक और आकर्षक संवाद संभव है। युवाओं में हिंदी को लेकर आत्मसम्मान और उत्साह का संचार हुआ है।

चुनौती–

लिपि और भाषा की शुद्धता का संकट– रोमन लिपि में हिंदी लेखन की प्रवृत्ति से देवनागरी और शुद्ध भाषा प्रयोग को हानि पहुँची है। हिंग्लिश के बढ़ते प्रयोग से भाषा की मौलिकता नष्ट हो रही है।

फेक न्यूज़ और अफवाहों का जाल– हिंदी भाषी वर्ग में मीडिया साक्षरता की कमी के कारण फर्जी समाचार तेजी से फैलते हैं। धार्मिक, जातिगत और राजनीतिक नफरत को हवा देने वाले कंटेंट को अधिक व्यूज़ और शेयर मिलते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

डिजिटल विषमता– ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी, स्मार्टफोन और तकनीकी साक्षरता की सीमाएँ अभी भी हिंदी भाषी समुदाय के एक बड़े हिस्से को पीछे रखती हैं। तकनीक और भाषा की दूरी के कारण उन्हें सोशल मीडिया के संपूर्ण लाभ नहीं मिल पाते।

गुणवत्तापूर्ण सामग्री का अभाव– हिंदी में बड़ी मात्रा में कंटेंट तो है, लेकिन उसमें से अधिकांश सामग्री या तो सतही है, या व्याकरणिक और विचारात्मक रूप से कमजोर। साहित्य, विज्ञान, तकनीक, और उच्च शिक्षा से संबंधित गंभीर हिंदी सामग्री की संख्या सीमित है।

नीति–निर्माण में उपेक्षा– सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स की नीतियाँ अक्सर अंग्रेज़ी केंद्रित होती हैं। हिंदी यूज़र्स की संख्या अधिक होते हुए भी हिंदी कंटेंट को एल्गोरिदम में प्राथमिकता कम दी जाती है।

सोशल मीडिया हिंदी भाषियों के लिए एक दोधारी तलवार की भाँति है एक ओर यह उन्हें वैश्विक मंच पर लाने का सशक्त माध्यम है, तो दूसरी ओर इससे जुड़ी चुनौतियाँ भाषा की आत्मा को क्षति पहुँचा सकती हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम इन अवसरों को सही दिशा में ले जाएँ और चुनौतियों से निपटने हेतु ठोस सामाजिक, शैक्षिक और तकनीकी प्रयास करें। तभी सोशल मीडिया हिंदी भाषियों के लिए एक सच्चा सशक्तिकरण मंच बन सकेगा। सोशल मीडिया ने 21वीं सदी के संवाद, अभिव्यक्ति और जनसंचार को एक नई दिशा दी है। हिंदी भाषा, जो भारत की सबसे बड़ी भाषिक आबादी का प्रतिनिधित्व करती है, इस डिजिटल क्रांति से अप्रभावित नहीं रही। इस शोध में हमने देखा कि किस प्रकार सोशल मीडिया ने हिंदी के प्रयोग को न केवल बढ़ावा दिया, बल्कि इसे जनसामान्य की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनाया।

देवनागरी लिपि और रोमन लिपि के बीच का संघर्ष, हिंग्लिश की बढ़ती उपस्थिति, साहित्यिक अभिव्यक्ति की संभावनाएँ, और डिजिटल साक्षरता की चुनौतियाँ, ये सभी पहलू हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति को जटिल परंतु गतिशील बनाते हैं। जहाँ एक ओर सोशल मीडिया ने हिंदी भाषियों को सशक्त करने, रोजगार देने, और आत्मगौरव बढ़ाने का मंच प्रदान किया है, वहीं दूसरी ओर भाषा की शुद्धता, सांस्कृतिक गहराई, और लिपिगत पहचान पर खतरे भी उत्पन्न किए हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि–

तकनीकी प्लेटफॉर्मों पर देवनागरी लिपि को प्राथमिकता दी जाए,
हिंदी टाइपिंग को सरल एवं सुलभ बनाया जाए,
डिजिटल साक्षरता को जन–जन तक पहुँचाया जाए, और
सोशल मीडिया पर हिंदी के गंभीर, सार्थक एवं गुणवत्ता–पूर्ण प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए।

यदि इन दिशाओं में ठोस कदम उठाए जाएँ, तो न केवल हिंदी भाषा की गरिमा और व्यापकता बनी रहेगी, बल्कि वह वैश्विक डिजिटल संवाद की एक सशक्त धुरी बनकर उभरेगी।

संदर्भ सूची–

सिंह, रामभरोसे (2018)। हिंदी भाषा और सोशल मीडिया का बदलता स्वरूप। दिल्ली भारतीय भाषाशास्त्र प्रकाशन।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 05, May 2022

मिश्र, अजय कुमार (2020)। डिजिटल भारत और भाषा की राजनीति। वाराणसी ज्ञान भारती प्रकाशन।

शर्मा, संजय (2017)। सोशल मीडिया का भाषाई विमर्श में योगदान। भाषा विमर्श, खंड 12, अंक 3, पृ. 45–56।

कुमार, मनोज (2021)। हिंदी और नई मीडिया चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ। नई दिल्ली राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।

भारती, निधि (2019)। हिंग्लिश और देवनागरी लिपि का द्वंद्व। भाषा अध्ययन पत्रिका, खंड 5, अंक 2, पृ. 33–40।

प्रसाद, राकेश (2020)। हिंदी भाषा और तकनीकी नवाचार। शिक्षा संवाद पत्रिका, अंक 18, पृ. 21–29।

त्रिपाठी, अनुराधा (2022)। सोशल मीडिया और भारतीय भाषाएँ। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय शोध पत्रिका।

UNESCO (2022) A Global Language Report: Digital Inclusion and Diversity- (हिंदी अनुवाद संस्करण)।

गुप्ता, रवीन्द्र. हिंदी और सोशल मीडिया. नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन, 2020।

भारतीय जन संचार संस्थान (IIMC). डिजिटल मीडिया रिपोर्ट 2022।

प्रसाद, सुमन. "सोशल मीडिया पर भाषिक प्रयोग का बदलता स्वरूप." समकालीन संवाद, खंड 18, अंक 2, 2021।

सुभाष, नीलेश. भाषा का सोशल सरोकार. राजन प्रकाशन, भोपाल, 2021।

हिंदी दिवस विशेषांक, दैनिक जागरण, 14 सितंबर 2023।